ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 8.4
IJAR 2023; 9(6): 368-371
www.allresearchjournal.com
Received: 05-03-2023
Accepted: 12-05-2023

निगार परवीन
शोधार्थी, शिक्षा-शास्त्र विभाग, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय कामेश्वर नगर, दरभंगा, बिहार, भारत

डॉ. नाज़मा बेबी
सहायक प्राध्यापिका, डॉ. ज़ाकिर हुसैन टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज, लहेरियासराय, दरभंगा, बिहार, भारत

Corresponding Author:
निगार परवीन
शोधार्थी, शिक्षा-शास्त्र विभाग, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय कामेश्वर नगर, दरभंगा, बिहार, भारत

कामकाजी महिला, घरेलू महिला एवं बालिकाओं का शिक्षा के प्रति अभिवृत्तियों का अध्ययन

निगार परवीन, डॉ. नाज़मा बेबी

सारांश

प्रस्तुत शोध-पत्र में कामकाजी महिला, घरेलू महिला एवं बालिकाओं का शिक्षा के प्रति अभिवृत्तियों का अध्ययन किया गया है। महिलाओं के शिक्षित हुए देश और समाज विकास नहीं कर सकता। यह तथ्य सत्य है कि महिला और पुरुष दोनों मिल कर ही देश को हर क्षेत्र में पूर्ण रूप से विकसित कर सकते है। महिलाओं को भी पुरुषों की तरह शिक्षा संबंधी गतिविधियों में बराबरी का मौका दिया जाना चाहिए। उन्हें शिक्षा से जुडी किसी भी तरह की कार्रवाई से दूर रखना क्रूरता के समान है। हमारे देश की आधी जनसंख्या का प्रतिनिधित्व महिलाएं करती है। अगर महिलाएं अपनी शिक्षा पूरी नहीं कर पायी तो इसका मतलब है की हमारे देश का विकास भी अधूरा है जो देश को पिछड़ेपन की ओर ले जायेगा। महिलाओं के शिक्षित होने से समाज और देश में विकास भी तेज़ी से हो पायेगा। महिलाओं के लिए शिक्षा के महत्व को व्यापक स्तर पर फ़ैलाने के लिए पूरे देश में जागरूकता पैदा करने की आवश्यकता है।

कूटशब्दः शिक्षा, कामकाजी महिला, घरेलू महिला विकसित

प्रस्तावना

भारत में महिला साक्षरता नए ज़माने की अहम जरुरत है। महिलाओं के शिक्षित हुए बिना हम देश के उज्जवल भविष्य की कल्पना भी नहीं कर सकते। परिवार, समाज और देश की उन्नति में महिलाओं की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है। भारत के लोकतंत्र को सफल बनाने का एकमात्र रास्ता यहीं है की महिलाओं तथा पुरुषों को शिक्षा हासिल करने के लिए बराबरी का हक़ दिया जाए। शिक्षित महिलाएं ही देश, समाज और परिवार में खुशहाली ला सकती है। यह कथन बिलकुल सत्य है की एक आदमी सिर्फ एक व्यक्ति को ही शिक्षित कर सकता पर एक महिला पूरे समाज को शिक्षित कर सकती है जिससे पूरे देश को शिक्षित किया जा सकता है।

आज महिला शिक्षा के महत्व को पहचानना बहुत आवश्यक है क्योंकि वे अपने बच्चो की पहली शिक्षक है जो आगे जाकर देश के निर्माण को एक नई पहचान देंगे। किसी भी बच्चे का भविष्य उसकी माँ द्वारा दिए प्यार और परवरिश पर निर्भर करता है जो एक महिला ही कर सकती है।

हर बच्चा अपनी ज़िन्दगी की पहली सीख अपनी माँ से ही हासिल करता है। इसलिए माँ का शिक्षित होना बेहद जरुरी है जिससे वह अपने बच्चे में वे गुण डाल सके जो उसके जीवन को सही दिशा दे सके। शिक्षित महिलाएं सिर्फ अपने बच्चे ही नहीं बल्कि उनके आसपास और कई लोगों की जिंदगी को बदल सकती है जो देश को विकसित करने में महत्वपूर्ण किरदार अदा कर सकते है।

एक महिला अपने जीवन में माँ, बेटी, बहन, पत्नी जैसे कई रिश्तों को निभाती है। किसी भी रिश्ते में बंधने से पहले वह महिला देश की आजाद नागरिक है तथा वह उन सब अधिकारों की हक़दार है जो पुरुषों को मिले हुए हैं। उन्हें अपनी इच्छा अनुसार शिक्षा ग्रहण करने का हक़ है जिससे वे अपने मनपसंद क्षेत्र में कार्य कर सके।

महिलाओं को अपने पैरों पर खड़ा करने तथा आत्मनिर्भर बनाने में शिक्षा सहायता करती है। शिक्षा न सिर्फ महिलाओं का समाज में स्तर ऊँचा करती है बल्कि महिलाओं के प्रति समाज की उस संकीर्ण सोच, जिसमे उन्हें माँ - बाप पर बोझ की तरह देखा जाता था, को भी खत्म करती है।

कामकाजी महिलाओं की शैक्षिक भागीदारी: महिलाओं की शैक्षिक भागीदारी महिलाओं की शैक्षिक भागीदारी औपचारिक शिक्षा से महिलाओं को कामकाज में भागीदारी को प्रोत्साहन मिला है और इससे उनकी क्षमताओं का विकास भी निरन्तर हो रहा है। स्वतंत्रता के बाद से महिलाओं की साक्षरता में लगातार वृद्धि हुई है यद्यपि यह पुरुषों की तुलना में बहुत कम हैं। उच्च शिक्षा की संस्थाओं में महिलाओं के नामांकन में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। तकनीकी तथा संवृत्तिक क्षेत्रों में भी महिलाओं की संख्या में सम्मानजनक वृद्धि हुई है। इंजीनियरिंग तथा प्रौद्योगिकीय क्षेत्रों में भी महिला छात्राओं की संख्या में वृद्धि हुई है।

महिलाओं की शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति तथा इसके प्रति आकांक्षाओं का निर्माण उनके विकास की आरंभिक अवस्था में होने की संभावना रहती है। ऐसी धारणा है कि उच्च शिक्षा, बुद्धि तथा श्रेष्ठ शैक्षिक उपलब्धि व्यक्ति को अच्छे व्यवसाय के लिए प्रेरित करती है। किन्तु अध्ध्यन में यह पाया गया है कि महिलाओं की वृति के प्रति अभिवृत्ति का संबंध उनकी बुद्धि, शैक्षिक उपलब्धि तथा अन्य क्रियाकलापों के इतिहास से नहीं जोड़ा जा सकता जैसा कि पुरुषों के बारे में धारणा बनी हुई है। पुरुष अपने विद्यालय तथा महाविद्यालय की शिक्षा प्राप्ति के समय अपनी व्यवसाय संबंधी आकांक्षाओं को प्रकट करते हैं और पुरस्कार संबंधी बाह्य उपलब्धियों से भी इसका संबंध जोड़ते हैं। वे अपने भविष्य तथा व्यवसाय से जुड़े सम्मान के प्रति सजग रहते हैं किन्तु महिलाएँ उच्च शिक्षा प्राप्त करने पर भी सामान्यतः ऐसा नहीं सोच पातीं, वे वृत्ति.विहीन किसी कार्य की चर्चा करती हैं जिसका संबंध उनकी अभिरुचि तथा आकांक्षा से नहीं होता। अच्छी उपलब्धि वाली छात्राएँ भी उच्च व्यवसाय प्राप्ति की योजना के बारे में नहीं सोचतीं। समाज के सामाजिक.आर्थिक रूप से पिछड़े वर्ग की लड़कियों के बारे में यह स्थिति और भी विकट हैं। इन छात्राओं के बारे में उनकी अच्छी बौद्धिक क्षमता तथा अच्छी उपलब्धि के रहते हुए भी उच्च शिक्षा तथा उच्च व्यवसाय प्राप्त करने की संभावनाएँ समाप्त प्रायः हैं। संक्षेप में आत्म समर्थन का संबंध सामाजिक समर्थन से जुड़ा हुआ है। इनके लिए चिन्ता का विषय वृत्ति नहीं है, किन्तु अच्छी पत्नी तथा अच्छी माँ बनना श्रेयस्कर माना जाता है।

महिलाओं की गृहिणी के रूप में भूमिका: परम्परागत रूप से महिलाओं की भूमिका गृहिणी के रूप में रही है, आजीविका अर्जक के रूप में नहीं। आज भी यही स्थिति है कि अधिकांश महिलाएँ मात्र गृहिणियाँ हैं। महिलाओं के वृत्ति.विकास की योजना बनाने में ऐसा नहीं है। गृहिणियों के रूप की प्रमुखता के कारण उसके कामकाजी होने, कार्य निष्पादन एवं कार्य पर रहने में बाधा आती है। अतः पुरुषों की तरह महिलाओं के जीवन में वृत्ति की कोई मुख्य भूमिका नहीं है। परिणामतः इन दोनों के वृत्ति योजना में भेद बरता जाता है। भले ही दोनों की योग्यताओं तथा रुचियों में कोई महत्वपूर्ण भेद न हो किन्तु वृत्ति की आशाओं और लक्ष्यों में अन्तर माना जाता है।

हमारे समाज में लड़के.लड़कियों के व्यवसाय का अवबोधन रूढ़िगत विधि से आंका जाता है। इस भेदभाव से उनके कार्यक्षेत्र की भूमिका में बचपन से अन्तर आरम्भ हो जाता है। संज्ञानात्मक विकास सिद्धान्त के मानने वालों के अनुसार, लिंग भेद की पहचान भले ही जन्म काल से हो जाती है किन्तु इसका मुख्य रूप 2.3 वर्ष की आयु में उस समय सामने आता है जब बालक.बालिकाएँ अपने लिंग भेद के प्रति सचेत हो जाते हैं। इतना ही नहीं वे वही कार्य करने के प्रति सचेष्ट हो जाते हैं जो स्त्री.पुरुष करते या जो वे सोचते हैं कि उनसे अपेक्षित हैं। परिणामस्वरूप "लिंग पहचान" धीरे.धीरे "लिंग भूमिका पहचान" में बदलने लगती है। परिणामस्वरूप लड़के पुरुषों की भूमिका व पहचान की तैयारी करने लगते हैं। लड़के कार्य के माध्यम से पहचान विकसित करते हैं। उसकी शैक्षिक,

व्यावसायिक व अन्य बाह्य इच्छाएँ आशानुकूल फलित व पुरस्कृत होने लगती हैं। लड़कियों के साथ यह स्थिति नहीं है। 3.6 वर्ष की आयु में लड़कियाँ लड़कों जैसे काम करने लगती हैं क्योंकि इस काम को सम्मानजनक समझा जाता व पुरस्कृत किया जाता है किन्तु इसके बाद वे महिलाओं के काम करने लगती हैं क्योंकि इन कामों में उनकी प्रशंसा की जाती है। अतः लड़की का आत्म-प्रत्यय वह नहीं है जो वस्तुतः उसे होना चाहिए किन्तु वह है जैसा समाज उससे अपेक्षा करता है। स्त्री कार्य के महत्व को कोई प्रमुखता नहीं दी जाती। कामकाजी महिला के विषय में यह नहीं माना जाता कि वह आत्मसंतुष्टि के लिए काम कर रही है अपितु यह माना जाता है कि वह परिवार के सुख के लिए कमा रही है। एक एकल कामकाजी महिला को नहीं सराहा जाता क्योंकि समाज अपेक्षा करता है कि उसका उचित अवस्था पर विवाह और उसके बच्चे हो जाएँ। इसी कारण लड़कियों का झुकाव विवाह की ओर अधिक है तथा व्यवसाय की ओर कम। आजकल कुछ महिलाओं ने गृहिणी की भूमिका से परे काम करने की ठान ली है जो कम मात्रा में हो रहा है और उनकी भूमिका कर रहा है। आज महिलाओं में परम्परागत विचारधारा व सीखना और उसकी नई रुचियों, अन्वेषणों और संभावनाओं के प्रति चेतना में द्वंद हो रहा हैं। परिणामस्वरूप इन परिवर्तनों के कारण उनके वृत्ति प्रतिरूप में परिवर्तन होना स्वाभाविक है।

बालिकाओं की शैक्षिक भागीदारी: शिक्षक का बालिकाओं की शिक्षा के विकास में यह दृष्टिकोण होना चाहिए कि इस माध्यम से वह मानव संसाधन का विकास कर रहे हैं। उन्हें बालिकाओं की व्यक्तिगत सहायता और प्रोत्साहन द्वारा यह प्रयत्न करना चाहिए कि वे उनमें निहित योग्यताओं की पहचान और विकास करें। उन्हें पहले तो अपनी ही लिंग.भेद संबंधी विचारधारा पर पुनः विचार करना चाहिए क्योंकि इस प्रकार की धारणा बालिकाओं के वृत्ति-विकास में बाधक बनती है। उन्हें चाहिए कि वे लिंग-भेद के आधार पर विषयों के चुनाव, कौशल, गतिविधियों, शौक तथा अन्य को न बाँटें। भेदभाव बरतने से उनका विकास रुकता है तथा समाज में नई भूमिका निभाने में बाधा उत्पन्न होती है। सीखने का अनुकूल वातावरण सीखने का अनुकूल वातावरण अध्यापक को चाहिए कि वह सीखने के अनुकूल वातावरण का निर्माण करने का प्रयास करे। उसे चाहिए कि वह बालिकाओं के बारे में घिसी पिटी उहापोह युक्त धारणाओं को प्रोत्साहन न दे। वह ध्यान रखे कि बालिकाओं में तकनीकी योग्यताओं के प्रति भय, चिन्ता, भीरुता, निष्क्रियता, पराङ्मुखता, दब्बूपन, तुकनमिजाजी, अयोग्यता की भावना जाग्रत न हो। बल्कि अध्यापक को चाहिए कि उनमें इस प्रकार के दबाव या तनाव का सामना करने का साहस जगाए और उनमें अपनी क्षमताओं के प्रति सम्मानजनक और रचनात्मक भावना का विकास हो। अध्यापक को यह भी चाहिए कि बड़ों द्वारा बन गई उनके प्रति दुर्भावनाओं का निराकरण करे और उन्हे सहयोग दें ताकि उनमें आत्मसम्मान की भावना जागृत हो।

शिक्षा महिलाओं को पुरुषों की तरह समाज और देश को प्रगति के पथ पर ले जाने के कर्तव्य से भी अवगत कराती है। पौराणिक युग से लेकर आजादी के बाद के समय तक महिला साक्षरता को लेकर किये गये प्रयासों में बहुत प्रगति हुई है। हालाँकि अभी यह कार्य संतुष्टि के स्तर तक नहीं पहुँचा है। अभी भी इस दिशा में काफी काम करना बाकी है। भारत के विश्व में बाकी देशों से पिछड़ने के पीछे महिला साक्षरता की कमी का ही होना है। भारत में महिला साक्षरता को लेकर गंभीरता इसलिए कम है क्योंकि बहुत पहले समाज में महिलाओं पर तरह - तरह की पाबंदियां थोप दी गई थी। इन पाबंदियों का जल्द ही हटाना बेहद जरुरी है। इन प्रतिबंधों को हटाने के लिए हमें महिला शिक्षा को लेकर व्यापक स्तर पर जागरूकता फैलानी होगी और महिलाओं को अपने अधिकारों के प्रति प्रेरित करना होगा जिससे वे आगे आकर समाज और देश को बदलने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सके।

शहरी एवं ग्रामीण इलाकों में महिला शिक्षा का स्तर काफी बढ़ा है। हालाँकि ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं के लिए अलग से विशेष योजनायें चलाई गयी है। गाँवों में महिलाओं को शिक्षित करने के साथ–साथ उनके लिए रोज़गार संबंधी अवसर भी बढ़ाये जाने चाहिए जिससे वे अच्छी आमदनी अर्जित कर अपने परिवार का सही गुज़ारा कर सके।

भारत में बालिकाओं की शिक्षा देश की वृद्धि के लिए काफी हद तक आवश्यक है क्योंकि लड़कियां लड़कों की तुलना में बेहतर काम कर सकती हैं। आजकल बालिकाओं की शिक्षा जरूरी है और यह अनिवार्य भी है क्योंकि महिलाएं देश का भविष्य हैं। भारत को सामाजिक और आर्थिक रूप से विकसित करने के लिए बालिकाओं की शिक्षा आवश्यक है। शिक्षित महिलाओं ने पेशेवर क्षेत्रों जैसे चिकित्सा, रक्षा सेवाओं, विज्ञान और प्रौद्योगिकी में अपने योगदान से भारतीय समाज पर सकारात्मक प्रभाव डाला है। महिलाएं व्यवसाय अच्छे तरीके से करती हैं और अपने घर और कार्यालय को संभालना अच्छी तरह से जानती हैं। बेहतर अर्थव्यवस्था और बेहतर समाज

बालिकाओं की शिक्षा का ही नतीजा है। शिक्षित महिलाएं अशिक्षित महिलाओं की तुलना में सही समय पर या बाद में शादी करके देश की आबादी को नियंत्रित करने में मदद कर सकती हैं।

निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि बालिकाओं की शिक्षा में कई फायदे हैं। एक सुशिक्षित और सुशोभित लड़की देश के विकास में अपना महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकती है। एक शिक्षित बालिका विभिन्न क्षेत्रों में पुरुषों के कंधे-से-कंधा मिलाकर काम कर सकती है। एक शिक्षित लड़की की अगर कम उम्र में शादी नहीं की गई तो वह लेखक, शिक्षक, वकील, डॉक्टर और वैज्ञानिक के रूप में देश की सेवा कर सकती हैं। इसके अलावा वह अन्य महत्वपूर्ण क्षेत्रों में भी बहुत अच्छी तरह से प्रदर्शन कर सकती है। आर्थिक संकट के इस युग में बालिकाओं के लिए शिक्षा एक वरदान है। आज के समय में एक मध्यवर्गीय परिवार की जरूरतों को पूरा करना वास्तव में कठिन है। शादी के बाद अगर एक शिक्षित लड़की काम करती है तो वह अपने पति के साथ परिवार के खर्चों को पूरा करने में मदद कर सकती है। अगर किसी महिला के पति की मृत्यु हो जाती है तो वह काम करके पैसा कमा सकती है। शिक्षा महिलाओं के सोच के दायरे को भी बढ़ाती है जिससे वह अपने बच्चों की परवरिश अच्छे से कर सकती है। इससे वह यह भी तय कर सकती है कि उसके और उसके परिवार के लिए क्या सबसे अच्छा है। शिक्षा एक लड़की को आर्थिक रूप से स्वतंत्र बनने में मदद करती है ताकि वह अपने अधिकारों और महिलाओं के सशक्तिकरण को पहचान सके जिससे उसे लिंग असमानता की समस्या से लड़ने में मदद मिले।

सन्दर्भ

1. बी, एकामर्बज : "स्कूल के वातावरण को प्रभावित करने वाले प्रयोगों का अध्ययन", रायल विश्वविद्यालय, भूटान, 2013
2. दास, आर. "माध्यमिक विद्यालयों में प्रधानाध्यापकों के निर्देशात्मक प्रंबधन व्यवहार और विद्यालयों के कार्य और संगठनात्मक वातावरण का अध्ययन", कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरूक्षेत्र, 2017
3. दीवान, रश्मि : "विद्यालय के प्रधानाध्यापकों में नायकत्व व्यवहार और मूल्य निर्माण (आदर्श) का अध्ययन", जामिया मिलिया इस्लामिया विश्वविद्यालय, दिल्ली, 2016
4. देसाई, आर.: "विद्यार्थियों के विकास के संबंध में कक्षा के वातावरण को प्रभावित करने वाले कारकों का अध्ययन", मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर, 2016
5. दयाल, रामेश्वर: "एक सामाजिक स्तरीय अध्ययन का संबंध अकादमिक के सामाजिक अवधारणा और एयरमेन के विशेष सन्दर्भ में", राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर, 2017
6. दत्या, डी.: "अध्यापकों की शैक्षिक एवं प्रशैक्षिक योग्यता स्तर का कक्षाकक्ष वातावरण पर प्रभाव का अध्ययन", उत्कल विश्वविद्यालय, भुनेश्वर, 2016
7. दास, एम. ए.: "माध्यमिक स्कूल के प्रशासनिक व्यवहार के नियमों में चुनी हुई अस्थिरताओं का अध्ययन", मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर, 2017